ईश्वर के साथ साझेदारी

हमने दो दोस्त देखें। एक जन ईश्वर के साथ सब कुछ साझा करता था, चाहे उसको अच्छा मिले या बुरा मिले; वह उसमें कोई भेदभाव नहीं करता था, जो मिला उसी में से वह ईश्वर को देता था। उसका दुसरा दोस्त इसके विपरीत था। उसे जो भी मिलता उसमें से अच्छा-अच्छा निकल कर ईश्वर को देता था, और जो सादा सादा होता था वह वह अपने पास रख लेता था। हमने उनके जीवन को करीब से देखा तो समझ पाए की 'जो पहला दोस्त ईश्वर को अच्छा बुरा सब कुछ देता था, जो मिला वह देता था; उसके पास जिंदगी में खट्टे-मीठे,भले-बुरे अनुभव थे; ईश्वर उसे सुख-दुख सब कुछ देता था। और दूसरा जो था जो ईश्वर को चुन चुन के सिर्फ अच्छा देता था, उसे सिर्फ अच्छा ही मिलता था।

अतः आपसे निवेदन है कि आप ईश्वर को जो मिलता है वहीं ना देकर जो मिलता है उसमें से सिर्फ अच्छा निकल कर ही ईश्वर को दे अर्पण करें। धन्यवाद !!!

और एक कहानी इसी सिलसिलेमे...

जब हम किसी को कुछ देते हैं फिर चाहे वह शब्द हो या कोई चीज। तब हमें संभाल कर उसे देना चाहिए, क्या पता वह हमारी चीज ईश्वर के चरणों में रखकर बाद में ग्रहण करता है? (हमे हमेशा अच्छाई प्रदान करनेवाले ईश्वर को गलतीसे भी हमारी ओर से कोई दर्द ना जाए।)

हमारी एक मौसी थी, वह क्या करती थी; जब भी कोई पत्र आता था तब वह बंद लिफाफा ईश्वर के सामने रखकर, बाद में खोल कर देखी थी । जब मैंने पूछा ऐसा क्यों करती है तो उसने कहा, " अगर इसमें कुछ अच्छा समाचार हो तो अच्छी बात है अगर नहीं हो तो ईश्वर हमें उसे चीज को सहन करने की शक्ति दे या सुधारने की बुद्धि दे।"